आज के हाईटेक बाबा

पहले के साधु बाबा
रहते थे गुफ़ाओं में
आज के ढोंगी बाबा
रहते हैं रहते हैं शिगुफ़ाओं में
पहले के साधु बाबा
मलते शरीर पर राख
आज के बाबा
देश-विदेश में बढा रहे शाख
पहले के बाबा के हाथ में थे
चिमटा कमंडल
आज के बाबा के हाथ में
सत्ता व मंत्रीमंडल
पहले के बाबा छोड़के
निकलते पत्नी घरबार
आज के बाबा सज़ा रहे
सुंदरियों का दरबार
पहले के बाबा होते
तपस्वी और चमत्कारी
आज के बाबा हैं
ढोंगी व्यापारी बलात्कारी
पहले के बाबा तलाशते थे
तीरथ में भगवान
आज के बाबा स्वारथ में
खुद हो गये भगवान
पहले के साधु बाबा भटकते
जंगल खेत खार
आज के बाबा बना रहे
बेशुमार महल दरबार
पहले के बाबा कहते थे
जग ईश्वर को सच्चा
आज के झूठे ढोंगी बाबा
खुद को कहते सच्चा
पहले के प्राकृतिक निहंग
बाबा होते नागा बाबा
आज के भौतिक भोगी लगते
लुच्चा नंगा बाबा
पहले के बाबा बताते
कैसे हटाए मन का मैल
आज के अय्याशी बाबा
जाते हैं शान से जेल
पहले के साधु बाबा को
जनता करती प्रणाम
आज के निकम्मी बाबा
जनता को बताते गुलाम

परमेश्वर वैष्णव

जुआरियों और सट्टेबाजों का आंतक

फ़रीदाबाद (म.मो.) मज़दूर मोर्चा ने अपने पिछले अंक में 'पुलिस व्यस्त है जुआ खिलवाने व शराब बिकवान में' शीर्षक से खबर प्रकाशित की थी जिसके चलते जुआरियों व सट्टेबाज़ों ने एनआईटी 1 नम्बर, जनता कॉलोनी से अपने अड्डे छोड़ एन.एच 5 नम्बर, 3 नम्बर, 2 नम्बर संजय कॉलोनी में नये अड्डे जमा कर गोरख धंधे शुरू कर दिए हैं। साथ ही इस धंधे में बुरी तरह फंस चुके लोग जिन्हें इस धंधे में (फंटर) कहा जाता है ने नाम न छापने की शर्त पर बताया कि किस तरह व उनके साथी इन बुकियों के चक्कर में फंस कर आज पूरी तरह बर्बाद हो चुके हैं व अपना सब कुछ गंवा कर लाखों रुपयों के कर्ज तले डूबे पड़े हैं।

रोटी के लिये मोहताज़ होकर भी इन बुकियों के 10-10 प्रतिशत के ब्याज देकर अपनी जान बचाये हुए हैं। एक फंटर ने बताया कि शहर के कई बुकियों ने तो फंटरों को फंसाने के लिये फ़ाईनेंसर तक अपने साथ जोड़ रखे हैं। जो इन बुकियों के कहने पर फंटरों को रुपये जुआ, सट्टा खेलने के लिये मुहैया करवाते हैं। बदले में इन फंटरों से खाली चैक कागजात खाली साईन करवा कर इन्हें पूरी तरह बांध लेते हैं।

कई बुकी तो अपने पुराने फंटरों को नये खिलाड़ी जो मैच सट्टा दाना खेलते हैं उनको इस दल-दल में लाने पर चार परसेंट तक कमीशन भी देते हैं, जितने रुपये का नए फंटर उनके पास जुआ खेलते हैं। इस धंधे में जनता कॉलोनी, 5 नम्बर 1 नम्बर 2 नम्बर व ज्यादा फ़रीदाबाद के कई नौजवान शहर छोड़कर भाग गये व कईयों ने आत्महत्या तक कर ली व फंटर के मकान, दुकान फ्लैट विकने को तैयार खड़े हैं। साथ ही (फंटर) ने बताया कि कई बुकी तो खुलेआम 2 से ढाई हज़ार रुपये मासिक पर फ़ोन में लाईन तक डाल रहे हैं। इस लाइन में मैच से जुड़ी जानकारी व मैच में सट्टा बाजार का भाव चलता है।

लाईव क्रिकेट मैच जो कि इंटरनेशनल व नेशनल होते हैं, 1-2 बॉल पहले की जानकारी रहती है। जो कि कुछ सैकेण्ड का खेल रहता है। इन्हीं सैकेण्डों में मैच बुकी बाजार में फंटरों को रेट देते हैं। थाना एनआईटी क्षेत्र में करोड़ों रुपये का क्रिकेट मैच पर सट्टा व दाना बुक का लेन-देन होता है।क्रिकेट सट्टा व दाना की बुक को चलाने वाला एक पूरा गिरोह इन दिनों फ़रीदाबाद में सक्रिय होकर खुलेआम अपने धंधों चलाकर शहर की युवा पीढ़ी को बर्बाद कर रहा है। जिसकी पूरी सूची पुख्ता सबूतों के साथ मज़दूर मोर्चा के पास है। (फंटर) ने बताया कि 1 नम्बर बी ब्लॉक में 1 दर्जन से अधिक मैच बुकी धड़ल्ले से अपने गोरखधंधों को अंजाम दे रहे हैं। इस धंधे में कई होटल मालिक भी लिप्त हैं। जो सिर्फ़ इन्हीं धंधों के लिए अपने होटल के कमरे मैच बुकियों व दाना बुकियों को बुक में अपनी 10 से 50 पैसे तक की हिस्सदारी कर उपलब्ध करवाते हैं। जिसमें पुलिस की सारी जिम्मेदारी होटल मालिकों की रहती है।

इस काले धंधे में थानों में तैनात अधिकारियों के अतिरिक्त सी पी कार्यालय, डीसीपी व एसीपी कार्यालयों में तैनात कुछ अधिकारी भी पूरी तरह शामिल रहते हैं।

सीपी यादव के समय बिल में घुसे टंडन की पुलिस दलाली पूरे ज़ोरों पर

फ़रीदाबाद (म.मो.) थाना एनआईटी क्षेत्र में इन दिनों शराब ठेकेदार तनेंद्र टंडन की चार्चा ज़ोरों पर है। थाने चौकियों में टंडन की अच्छी खासी पैंठ है।.फैसले व लेन-देन कराना यानी दलाली का काम टंडन का बढिया चल रहा है। जिसके चलते टंडन के चेले-चपाटे उसका बखान करते नहीं थकते।

बखान करते-करते उनको ये भी नहीं दिखता कि किसके सामने व कहां हवाबाज़ी कर रहे हैं। एनआईटी क्षेत्र में टंडन ने करीब आधा दर्जन से अधिक चेले छोड़ रखे हैं जो कि उसके लिये फ़ैसले, लेन-देन, कब्ज़े की प्रोपर्टी, उधारी का पैसे के काम उसके हवाले करते हैं। जिसको टंडन अपने विश्वसनिय पुलिस अधिकारियों के माध्यम से समझौते करवाकर मोटी दलाली कमाता है। इसके अलावा शहर के छोटे-बड़े अपराधियों के साथ टंडन का सम्पर्क बना रहता है।

पिछले दिनों सीपी सुभाष यादव ने टंडन का कच्चा चिट्ठा खंगाला था तो टंडन के नीमका जेल में बंद अपराधियों के साथ सम्पर्क साबित हुए थे। जिसको लेकर सीपी यादव ने टंडन की ऐसी चूडी टाईट करी थी कि टंडन को बड़खल विधायक सीमा त्रिखा की शरण में जाना पड़ा था। साथ ही सी.पी. यादव ने टंडन को सीमा त्रिखा की मौजूदगी में सख्त हिदायत दी थी कि वो अपने कर्मकाण्डों को छोड़ थाने चौकियों के आस-पास भी न फ़टके। जिसके बाद टंडन की हालत उस चूहे की तरह हो गई जो कि यादव के समय अपनी बिल में दूबका रहा।

लेकिन टंडन की दलाली का धंधा इन दिनों फ़िर ज़ोरों पर है। थाना प्रभारी मित्रपाल का तो ये खास दल्ला बताया जाता है। व अक्सर थाना एनआईटी में आसानी से देखा जा सकता है। शहर में अपराध निरंतर बढ़ता जा रहा है। इस बात से विधायक सीमा को कोई फ़र्क नहीं पड़ता उसे तो टंडनों जैसे दलालों की फ़िक्र है क्योंकि टंडन जैसे ही तो चुनाव में पैसा खर्च करते हैं और सीमा त्रिखा जैसी बेचारी विधायक बनती है।

टंडन थाने-चौकियों में अफ़सरों व पुलिस के अधिकारियों को खुश करने के लिये सारा सामान उपलब्ध करवाता है।

शारदा राठौर भाजपा टिकट पर लड़ेगी अगला चुनाव ?

पेज एक का शेष

कर रहे हैं वहीं खट्टर सरकार में सीधा दखल होने का भी उन्हें पूरा लाभ है जबकि कृष्णपाल के पास ऐसा कुछ भी नहीं है, ऊपर से उनके मामा श्री व अन्य श्री श्रीयों ने शहर में जो लूट-मार व उत्पात मचा रखा है, उससे उनका कद दिन ब दिन घटता ही जा रहा है। ऐसे में न जाने कब उनका मंत्री पद भी हाथ से फ़िसल जाय।

उधर, शारदा राठौर को अपने से भी पहले राजनीति में उतारने वाले विपुल गोयल हर संभव प्रयास करेंगे शारदा को अपनी पार्टी में लाने का ताकि उनकी अपनी जड़ें भी और मजबूत हो सकें। अब शारदा को सोचना है कि उन्हें अपना राजनीतिक भविष्य कैसे सुरक्षित एवं विकसित करना है। वैसे भी नेताओं के लिये सभी पूंजीवादी पार्टियां एक जैसी ही होती हैं। चाहे कांग्रेस में रहें या भाजपा में धंधा तो एकसा ही चलता है लोग़ों को बेवकूफ़ बनाने का।

क्या गोडसे को दफन कर पाएंगे मोदी

2014 में नरेंद्र मोदी की हाईटेक स्पीड बोट के सामने करप्शन के दलदल में फंसा कांग्रेस का पुराना जहाज मुकाबले में कहीं नहीं ठहरा। इस गलाकाटू स्पर्धा के समानांतर मोदी को अपने पूर्व मार्गदर्शक आडवाणी के मुकाबले 'एक म्यान में दो तलवार नहीं' वाली भावनात्मक,आसान लेकिन निर्मम, दौड़ भी विजेता के रूप में संपन्न करनी पड़ी थी।

2019 परिदृश्य में मोदी 'एकमात्र तलवार' रह गए हैं, लेकिन अब म्यान दो हैं और एक को खारिज करना अनिवार्य होता जा रहा है। देश पर छह दशक राज करने वाली कांग्रेस ने ऐसी ही दुविधा से सामना होने पर गांधी मार्ग को तिलांजलि देकर वैश्वीकरण के रास्ते को चुना था। कॉरपोरेट ट्रोजन हॉर्स मोदी के लिए यह रूपक कहीं कठिन विश्वासघाती उपायों की मांग करेगा। यानी उन्हें आरएसएस पर लगाम कसनी होगी।

कांग्रेस का गाँधी क्षण कब आया, यानी उसने गाँधी से औपचारिक किनारा कब किया? ज्यादातर प्रेक्षक इसका श्रेय नरसिम्हा राव-मनमोहन सिंह जोड़ी के 1991 से शुरू कॉरपोरेट वैश्वीकरण दौर को देना चाहेंगे।

हालांकि,अनौपचारिक रूप से तो यह किनारा 15 अगस्त 1947 से ही होना शुरू हो गया था, और 1984 में राजीव गाँधी के पारिवारिक सिंहासन पर बैठने के साथ दिखाई देना भी।

इसी तर्ज पर, मोदी के सत्ता में आने के बाद भाजपा का गोडसे क्षण भी आना तय था। कॉरपोरेट राष्ट्रवाद पर सवार मोदी के लिए गोडसेवादियों के हिंदुत्व से आज नहीं तो कल पीछा छुड़ाना अपरिहार्य है। सवाल था, औपचारिक रूप से कब शुरू होगा यह दौर?

मेरी सामान्य राजनीतिक समझ से इसका जवाब बनता है, 2019 में लोकसभा चुनाव जीतने के बाद। संघियों,बजरंगियों, हिन्दू वाहिनियों का चुनावी काम पूरा हो जाने के बाद। लेकिन यह घड़ी, बेशक अनौपचारिक रूप से सही, मोदी के सिर पर जल्दी आन पड़ी लगती है।

नरसिम्हा राव का '91 और मोदी का '19! कॉरपोरेट अश्वमेध का एक और पड़ाव, बस संख्या उलट गयी है। इस तारीख को चाह कर भी, लाल किले से चाह कर भी, मोदी बदल नहीं सकते। उनके कोर वोट बैंक का एक अच्छा—खासा हिस्सा है 'आस्थावादियों' का,जो संघियों-बजरंगियों-हिन्दू वाहिनियों के जब-तब होने वाले लम्पट राष्ट्रवादी प्रदर्शन से गदगद हैं। मोदी, इस हिस्से को खोने का जोखिम अभी नहीं ले सकते।

इसी पंद्रह अगस्त को मोदी ने लाल किले से चेतावनी दी थी कि आस्था के नाम पर हिंसा बर्दाश्त नहीं की जायेगी। इसका उन्हें तुरंत जो जवाब मिला, जानने के लिए गाँधीवादी हिमांशु कुमार की यह ताजा पोस्ट पढ़िए—

अभी दो वीडियो देखे हैं, एक में बजरंग दल के गुंडे एक महिला से बहस कर रहे हैं कि तुमने चप्पल पहन कर झंडा क्यों फहराया? दूसरे वीडियो में बजरंग दल के गुंडे एक मुस्लिम स्कूल संचालक को ध्वजारोहण समारोह से पकड़कर उसका जुलूस निकाल रहे हैं, क्योंकि उस मुस्लिम ने जूते पहन कर राष्ट्रध्वज फहराया था। झंडा फहराने के बारे में कानून ध्वजा संहिता में लिखा गया है। कानून में कहीं नहीं लिखा है कि भारत का राष्ट्रध्वज जूते—चप्पल उतारकर किया जाना चाहिए, आज तक कभी किसी राष्ट्रपति या किसी प्रधानमंत्री ने जूते चप्पल उतारकर झंडा नहीं फहराया, जूते चप्पल उतारना धार्मिक रिवाज है।

शेष पेज चार पर